आर्थिक सुधार और भारतीय कृषि

शोधपत्र-अर्थशास्त्र

* प्रा. सुदाम कोरडे

देश के आर्थिक विकास को बढाने के लिए आर्थिक सुधारों को चालू करने और उन्हे कार्यान्वित करने के बार में एकमत प्राप्त हो चुका है। नब्बे के दशक में दो महत्वपुर्ण घटना का भारतीय कृषि पर बडा प्रभाव पडा है, वह इस प्रकार है। 1. अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए उदारीकरण नीति का स्विकार किया गया। 2. डब्ल्यु.टी. ओ. के गठन से विश्वव्यापार में परिवर्तन हुआ। सन 1995 में डब्ल्यु.टी. ओ. की स्थापना हुई। वर्तमान में डब्ल्यु.टी. ओ. के 182 देश सदस्य है। यह संगठन विश्वव्यापार कें बारे में नियंत्रण रखती है। खुली अन्तर्राश्ट्रीय व्यापार नीति निर्माण करना और विश्व व्यापार में वृध्दी करना यह डब्ल्यु.टी. ओ. का प्रधान उदिद्ष्ट है । भारत डब्ल्यु.टी. ओ. का सस्थापक सदस्य देश है। डब्ल्यु.टी. ओ. की नीति कृषि व्यापार को खुली करने में अधितर महत्व देती है। आजतक डब्ल्यु.टी. ओ. के छः परिशद हो चुकी है। उनमें से हॉगकॉग परिशद में विकसित राष्ट्र ने 2013 तक कृषि व्यवसाय को दी जाने वाली साब्सिडी कम करने का मान्य किया है । 1991 में भारत ने आपने आर्थिक संरचना में परिवर्तन लाकर आर्थिक सुधार के नीति का स्विकार किया। उदारीकरण की नीति के अन्तर्गत भारत सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था को पूर्ण रूप से स्वतंत्र बनाने की और अग्रसर हो रही है।

उदारीकरण की नीतिः– अगस्त 1991 में शुरू हुई इस उदारीकरण की नीति को इस आशा के साथ अपनाया गया था कि यह नीति भारतीय अर्थव्यवस्था को एक स्वतंत्र और सक्षम बाजारी अर्थव्यवस्था प्रदान करेंगी। परन्तु उदारीकरण के नाम पर जितने भी आर्थिक सुधार सरकार व्दारा किए जा रहे है वे भारतीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप न होकर विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश व्दारा निर्देषित है। उदरीकरण देश के लिए लाभकारी सिध्द हो रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था जो नियमों प्रतिबन्धो, लाइसेन्स राज की जटिलता सें ग्रस्त थी। अब कुछ हद तक खुलकर सांसे लेने लगी है। भूमण्डलीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण का देश की अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों पर तो सकारात्मक प्रभाव पडा, परन्तु जहॉ तक कृषि क्षेत्र का प्रश्न है। यह कहा जा सकता है कि आर्थिक सुधार कार्यक्रमो में कृषि क्षेत्र की उपेक्षा हो गई है ।

आर्थिक सुधार और भारतीय कृषि :– आज के समय भारत में आर्थिक सुधार का अवलंब किया जा रहा है। खुली आर्थिक नीति के 18 साल में कृषि क्षेत्रपर आर्थिक सुधार का क्या प्रभाव हुआ यह प्रस्तुत शोध निबंध में लिखा गया है ।

शोध का उददेश :–1. भारतीय कृषि समस्या का अध्ययन करना 2. भारतीय कृषि की रूपरेखा स्पष्ट करना । 3. आर्थिक सुधार नीति का कृषि क्षेत्र पर जो प्रभाव हुआ उसकी जानकारी लेना।. 4. प्राप्त तथ्यो के आधार पर निश्कर्श निकालना ।

संशोधन पद्धती– इस शोध निबंध के लिए भारतीय कृषि क्षेत्र निश्चित किया है। उपयुक्त उदेश्यों के अध्ययन के लिए व्दितीय स्त्रोतो का अधिक सहयोग लिया है। जिसके अन्तर्गत पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तके, पूर्ववर्ती अध्ययनो एवं समाचार पत्रोंका आधार लिया है ।

सुधार नीति के बाद उत्पादन में कृषि क्षेत्र का हिस्सा खाद्यान्न उत्पादन ;मिलियन टन में उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है ।

1. भारत के कुल उत्पादन में कृषि क्षेत्र का हिस्सा सुधार नीति के पूर्व 34.50 : था । सुधार नीति के अवलंब के बाद औसत 25.42 :रहा । 2. इसी समय कृषि उत्पादन वृध्दीदर सुधार नीति से पूर्व 4.8 : था । सुधार नीति का अवलंब करने के बाद औसत 3.74: तक पहूँचा । इस प्रकार नीति के बाद वृध्दीदर मे कमी आयी। 3. सुधार नीति के पूर्व खाद्यान्न उत्पादन औसत 82.84 मिलियन टन था । सुधार नीति अवलंब के बाद औसत 195.76 मिलियन टन तक वृध्दी हुई। 4. सुधार नीति पूर्व काल में खाद्यान उत्पादन वृध्दी का औसत दर 3.72 : तक था। सुधार नीति के अवलंब के बाद 1.88 : तक कम हुआ। 5. सार्वजनिक क्षेत्र द्वार कृषि विकास के लिए निवेश में गिरावट इस उद्देश से लायी गयी कि सार्वजनिक क्षेत्र का भाग कम किया जाए और यह उम्मीद की गयी कि निजी क्षेत्र सिंचाई का विस्तार करेंगा, परन्तु ऐसा न हो सका।

शोध–सुधार नीति के पूर्व और सूधार नीति के बाद

* अर्थशास्त्र विभाग, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

वर्ष	कुल उत्पादन में कृषि क्षेत्र का हिस्सा	उत्पादन वृद्धी दरं
1980–81	34.50	+4.8
1991–92	30.00	+2.3
1992–93	30.02	+6.1
1993–94	29.50	+4.1
1994–95	28.80	+5.0
1995–96	26.00	+0.9
1996–97	26.10	+9.6
1997–98	24.40	+2.4
1998–99	26.40	+6.4
1999–00	25.20	+1.3
2000–01	24.20	+0.2
2001–02	24.30	+5.7
2002–03	22.20	–7.2
2003–04	24.10	+9.6
2005–06	22.00	+0.6
2006–07	18.00	+9.2
औसत	25.42	+3.74

के काल में कई फसलो के क्षेत्र में परिर्वतन हुआ । खाद्यान्न, दाले, मोटे आनाज, बाजरा इन फसलों के क्षेत्र में वृध्दी के दर में गिरावट रही । चावल, गेहूँ , मक्का, चना, कपास, गन्ना यह क्षेत्र के वृध्दी दर में बढोतरी हुई । नब्बे के दशक में सिंचाई – आधीन क्षेत्रफल की वृध्दीर 2.3 प्रतिशत तक कम हो जाना जबकि यह अस्सी के दशक में 3.5 प्रतिशत थी। समग्र कृषि विकास को मन्द करने वाला एक अन्य कारण तत्व है। आर्थिक सुधारों में सिंचाई के विस्तार पर पर्याप्त ध्यान नही दिया और यह नब्बे के दशक में कृषि उत्पादन एवं उत्पादिता (Productivity) में अपेक्षाकृत कम वृद्धि के लिए उत्तरदायी है।

निष्कर्ष–1. आज के युग में कृषि उत्पादन में हिस्सा 18 : लगभग है। 2. सुधार नीति कें बाद भारत में 64 : लोग कृषि पर निर्भर है। 3. सुधार नीति के बाद खाद्यान्न वृद्धी का औसत दर 3.72: से 2.48: ऐसा कम हुआ। 4. मोटे अनाज छोडके सभी फसलो के उत्पादन में आर्थिक सुधार नीति के युग में वद्धी हुई । 5. आर्थिक सुधार काल में कृषि की उपेक्षा हुई ।

वर्ष	उत्पादन	वृद्धीदर	सुधार पूर्व और सुधार के बाद औसत दर
1950–51	50.82	——	
1960–61	80.10	+6.10	
1970–70	108.42	+3.21	+3.72
1980–81	129.60	+1.95	
1990–91	176.39	+3.61	
1991–92	168.07	–4.50	
1992–93	179.48	+6.05	
1993–94	194.26	+8.20	
1994–95	191.50	–1.40	
1995–96	180.41	–5.80	
1996–97	199.43	+10.50	
1997–98	192.34	–3.60	+ 1.88
1998–99	203.60	+5.80	
1999–00	209.80	+3.04	
2000–01	195.90	–6.62	
2001–02	212.90	+8.67	
2002–03	174.80	–17.89	
2003–04	213.20	+21.96	
2004–05	198.40	–6.94	
2005–06	208.60	+5.14	
2006–07	209.20	+0.29	
2007–08	227.30	+8.65	

सुझाव–1. आर्थिक सुधार नीति सें दी जाने वाली साब्सिडी बढानी चाहिए। 2. कृषि क्षेत्र पर कमसे कम लोगो का निर्भर रहना चाहिए। 3. अतः राज्य सरकार के लिए यह जरूरी हो जाता है कि, कृषि, सिंचाई और ग्राम आधार संरचना (Rural Infrastructure) से अपने हाथ पिछे खीचने की अपेक्षा, इन क्षेत्रों में सार्वजनिक निवेश को मजबूत करें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Indian Economy - R. Dutt, K.P.M. Sundhram. 2. प्रतियोगिता दर्पन–हिन्दी मासिक 3. कृषि अर्थशास्त्र – डॉ. जयप्रकाश मिश्र. 4. अर्थबोध – डॉ. व्ही.व्ही. सुकाळे 5. कृषि अर्थशास्त्र–डॉ. विजय कवि मंडन 6. जागतिक अर्थव्यवस्था–प्रा.भोसले/प्रा. काटे